==

AVYAKT MURLI

18 / 01 / 2000

==

18-01-2000 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

बह्मा बाप समान त्याग, तपस्या और सेवा का वायब्रेशन विश्व में फैलाओ

आज समर्थ बापदादा अपने समर्थ बच्चों को देख रहे हैं। आज का दिन स्मृति दिवस सो समर्थ दिवस है। आज का दिन बच्चों को सर्व शक्तियां विल में देने का दिवस है। दुनिया में अनेक प्रकार की विल होती है लेकिन ब्रह्मा बाप ने बाप से प्राप्त हुई सर्व शक्तियों की विल बच्चों को की। ऐसी अलौकिक विल और कोई भी कर नहीं सकते हैं। बाप ने ब्रह्मा बाप को साकार में निमित्त बनाया और ब्रह्मा बाप ने बच्चों को `निमित्त भव' का वरदान दे विल किया। यह विल बच्चों में सहज पावर्स की (शक्तियों की) अनुभूति कराती रहती है। एक है अपने पुरूषार्थ की पावर्स और यह है परमात्म-विल द्वारा पावर्स की प्राप्ति। यह प्रभु देन है, प्रभु वरदान है। यह प्रभु वरदान चला रहा है। वरदान में पुरूषार्थ की मेहनत नहीं लेकिन सहज और स्वत: निमित्त बनाकर चलाते रहते हैं। सामने थोड़े से रहे लेकिन बापदादा द्वारा, विशेष ब्रह्मा बाप द्वारा विशेष बच्चों को यह विल प्राप्त हुई है और बापदादा ने भी देखा कि जिन बच्चों को बाप ने विल की उन सभी बच्चों ने (आदि रत्नों ने और सेवा के निमित्त बच्चों ने) उस प्राप्त

विल को अच्छी तरह से कार्य में लगाया। और उस विल के कारण आज यह ब्राह्मण परिवार दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जाता है। बच्चों की विशेषता के कारण यह वृद्धि होनी थी और हो रही है।

बापदादा ने देखा कि निमित्त बने हुए और साथ देने वाले दोनों प्रकार के बच्चों की दो विशेषतायें बहुत अच्छी रही। पहली विशेषता - चाहे स्थापना के आदि रत्न, चाहे सेवा के रत्न दोनों में संगठन की युनिटी बहुत-बहुत अच्छी रही। किसी में भी क्यों, क्या, कैसे... यह संकल्प मात्र भी नहीं रहा। दूसरी विशेषता - एक ने कहा दूसरे ने माना। यह एकस्ट्रा पावर्स के विल के वायुमण्डल में विशेषता रही। इसलिए सर्व निमित्त बनी हुई आत्माओं को बाबा-बाबा ही दिखाई देता रहा।

बापदादा ऐसे समय पर निमित्त बने हुए बच्चों को दिल से प्यार दे रहे हैं। बाप की कमाल तो है ही लेकिन बच्चों की कमाल भी कम नहीं है। और उस समय का संगठन, युनिटी - हम सब एक हैं, वही आज भी सेवा को बढ़ा रही है। क्यों? निमित्त बनी हुई आत्माओं का फाउण्डेशन पक्का रहा। तो बापदादा भी आज के दिन बच्चों की कमाल को गा रहे थे। बच्चों ने चारों ओर से प्यार की मालायें पहनाई और बाप ने बच्चों की कमाल के गुणगान किये। इतना समय चलना है, यह सोचा था? कितना समय हो गया? सभी के मुख से, दिल से यही निकलता, अब चलना है, अब चलना है.... लेकिन बापदादा जानते थे कि अभी अव्यक्त रूप की सेवा होनी है। साकार में इतना बड़ा हाल बनाया था? बाबा के अति लाड़ले डबल विदेशी

आये थे? तो विशेष डबल विदेशियों का अव्यक्त पालना द्वारा अलौकिक जन्म होना ही था, इतने सब बच्चों को आना ही था। इसलिए ब्रह्मा बाप को अपना साकार शरीर भी छोड़ना पड़ा। डबल विदेशियों को नशा है कि हम अव्यक्त पालना के पात्र हैं?

ब्रह्मा बाप का त्याग ड्रामा में विशेष नूंधा हुआ है। आदि से ब्रह्मा बाप का त्याग और आप बच्चों का भाग्य नूंधा हुआ है। सबसे नम्बरवन त्याग का एक्ज़ाम्पल ब्रह्मा बाप बना। त्याग उसको कहा जाता है - जो सब कुछ प्राप्त होते हुए त्याग करे। समय अनुसार, समस्याओं के अनुसार त्याग - श्रेष्ठ त्याग नहीं है। शुरू से ही देखो तन, मन, धन, सम्बन्ध, सर्व प्राप्ति होते हुए त्याग किया। शरीर का भी त्याग किया, सब साधन होते हुए स्वयं पुराने में ही रहे। साधनों का आरम्भ हो गया था। होते हुए भी साधना में अटल रहे। यह ब्रह्मा की तपस्या आप सब बच्चों का भाग्य बनाकर गई। ड्रामानुसार ऐसे त्याग का एक्ज़ाम्पल रूप में ब्रह्मा ही बना और इसी त्याग ने संकल्प शक्ति की सेवा का विशेष पार्ट बनाया। जो नये-नये बच्चे संकल्प शक्ति से फास्ट वृद्धि को प्राप्त कर रहे हैं। तो सुना ब्रह्मा के त्याग की कहानी।

ब्रह्मा की तपस्या का फल आप बच्चों को मिल रहा है। तपस्या का प्रभाव इस मधुबन भूमि में समाया हुआ है। साथ में बच्चे भी हैं, बच्चों की भी तपस्या है लेकिन निमित्त तो ब्रह्मा बाप कहेंगे। जो भी मधुबन तपस्वी भूमि में आते हैं तो ब्राह्मण बच्चे भी अनुभव करते हैं कि यहाँ का

वायुमण्डल, यहाँ के वायब्रेशन सहजयोगी बना देते हैं। योग लगाने की मेहनत नहीं, सहज लग जाता है और कैसी भी आत्मायें आती हैं, वह कुछ न कुछ अनुभव करके ही जाती हैं। ज्ञान को नहीं भी समझते लेकिन अलौकिक प्यार और शान्ति का अनुभव करके ही जाते हैं। कुछ न कुछ परिवर्तन करने का संकल्प करके ही जाते हैं। यह है ब्रह्मा और ब्राह्मण बच्चों की तपस्या का प्रभाव। साथ में सेवा की विधि - भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवा बच्चों से प्रैक्टिकल में कराके दिखाई। उसी विधियों को अभी विस्तार में ला रहे हो। तो जैसे ब्रह्मा बाप के त्याग, तपस्या, सेवा का फल आप सब बच्चों को मिल रहा है। ऐसे हर एक बच्चा अपने त्याग, तपस्या और सेवा का वायब्रेशन विश्व में फैलाये। जैसे साइन्स का बल अपना प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में दिखा रहा है ऐसे साइन्स की भी रचता साइलेन्स बल है। साइलेन्स बल को अभी प्रत्यक्ष दिखाने का समय है। साइलेन्स बल का वायब्रेशन तीव्रगति से फैलाने का साधन है - मन-बुद्धि की एकाग्रता। यह एकाग्रता का अभ्यास बढ़ना चाहिए। एकाग्रता की शक्तियों द्वारा ही वायुमण्डल बना सकते हो। हलचल के कारण पावरफुल वायब्रेशन बन नहीं पाता।

बापदादा आज देख रहे थे कि एकाग्रता की शक्ति अभी ज्यादा चाहिए। सभी बच्चों का एक ही दृढ़ संकल्प हो कि अभी अपने भाई-बहनों के दु:ख की घटनायें परिवर्तन हो जाएँ। दिल से रहम इमर्ज हो। क्या जब साइन्स की शक्ति हलचल मचा सकती है तो इतने सभी ब्राह्मणों के साइलेन्स की

शक्ति, रहमदिल भावना द्वारा वा संकल्प द्वारा हलचल को परिवर्तन नहीं कर सकती! जब करना ही है, होना ही है तो इस बात पर विशेष अटेन्शन दो। जब आप ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर के बच्चे हैं, आपके ही सभी बिरादरी हैं, शाखायें हैं, परिवार है, आप ही भक्तों के इष्ट देव हो। यह नशा है कि हम ही इष्ट देव हैं? तो भक्त चिल्ला रहे हैं, आप सुन रहे हो! वह पुकार रहे हैं - हे इष्ट देव, आप सिर्फ सुन रहे हो, उन्हों को रेसपाण्ड नहीं करते हो? तो बापदादा कहते हैं हे भक्तों के इष्ट देव अभी पुकार सुनो, रेसपाण्ड दो, सिर्फ सुनो नहीं। क्या रेसपाण्ड देंगे? परिवर्तन का वायुमण्डल बनाओ। आपका रेसपाण्ड उन्हों को नहीं मिलता तो वह भी अलबेले हो जाते हैं। चिल्लाते हैं फिर चुप हो जाते हैं।

ब्रह्मा बाप के हर कार्य के उत्साह को तो देखा ही है। जैसे शुरू में उमंग था - चाबी चाहिए! अभी भी ब्रह्मा बाप यही शिव बाप से कहते - अभी घर के दरवाजे की चाबी दो। लेकिन साथ जाने वाले भी तो तैयार हों। अकेला क्या करेगा! तो अभी साथ जाना है ना या पीछे-पीछे जाना है? साथ जाना है ना? तो ब्रह्मा बाप कहते हैं कि बच्चों से पूछो अगर बाप चाबी दे दे तो आप एवररेडी हो? एवररेडी हो या रेडी हो, सिर्फ रेडी नहीं - एवररेडी। त्याग, तपस्या, सेवा तीनों ही पेपर तैयार हो गये हैं? ब्रह्मा बाप मुस्कराते हैं कि प्यार के आँसू बहुत बहाते हैं और ब्रह्मा बाप वह आँसू मोती समान दिल में समाते भी हैं लेकिन एक संकल्प ज़रूर चलता कि सब एवररेडी कब बनेंगे! डेट दे देवें। आप कहेंगे कि हम तो एवररेडी हैं, लेकिन आपके

जो साथी हैं उन्हें भी तो बनाओ या उनको छोड़कर चल पड़ेंगे? आप कहेंगे ब्रह्मा बाप भी तो चला गया ना! लेकिन उनको तो यह रचना रचनी थी। फास्ट वृद्धि की ज़िम्मेवारी थी। तो सभी एवररेडी हैं, एक नहीं? सभी को साथ ले जाना है ना या अकेले-अकेले जायेंगे? तो सभी एवररेडी हैं या हो जायेंगे? बोलो। कम से कम 9 लाख तो साथ जायें। नहीं तो राज्य किस पर करेंगे? अपने ऊपर राज्य करेंगे? तो ब्रह्मा बाप की यही सभी बच्चों के प्रति शुभ-कामना है कि एवररेडी बनो और एवररेडी बनाओ।

आज वतन में भी सभी विशेष आदि रत्न और सेवा के आदि रत्न इमर्ज हुए। एडवांस पार्टी कहती है हम तो तैयार हैं। किस बात के लिए तैयार हैं? वह कहते हैं यह प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजायें तो हम सभी प्रत्यक्ष होकर नई सृष्टि की रचना के निमित्त बनेंगे। हम तो आह्वान कर रहे हैं कि नई सृष्टि की रचना करने वाले आवें। अभी काम सारा आपके ऊपर है। नगाड़ा बजाओ। आ गया... आ गया... का नगाड़ा बजाओ। नगाड़ा बजाने आता है? बजाना तो है ना! अभी ब्रह्मा बाप कहते हैं डेट ले आओ। आप लोग भी कहते हो ना कि डेट के बिना काम नहीं होता है। तो इसकी भी डेट बनाओ। डेट बना सकते हो? बाप तो कहते हैं आप बनाओ। बाप कहते हैं आज ही बनाओ। कान्फ्रेन्स की डेट फिक्स किया है और यह, इसकी भी कान्फ्रेन्स करो ना! विदेशी क्या समझते हैं, डेट फिक्स हो सकती है? डेट फिक्स करेंगे? हाँ या ना! अच्छा - दादी जानकी के साथ राय करके करना। अच्छा।

देश विदेश के चारों ओर के, बापदादा के अति समीप, अति प्यारे और न्यारे, बापदादा देख रहे हैं कि सभी बच्चे लगन में मगन हो लवलीन स्वरूप में बैठे हुए हैं। सुन रहे हैं और मिलन के झूले में झूल रहे हैं। दूर नहीं हैं लेकिन नयनों के सामने भी नहीं, समाये हुए हैं।

तो ऐसे सम्मुख मिलन मनाने वाले और अव्यक्त रूप में लवलीन बच्चे, सदा बाप समान त्याग, तपस्या और सेवा का सबूत दिखाने वाले सपूत बच्चे, सदा एकाग्रता की शक्ति द्वारा विश्व का परिवर्तन करने वाले विश्व परिवर्तक बच्चे, सदा बाप समान तीव्र पुरूषार्थ द्वारा उड़ने वाले डबल लाइट बच्चों को बापदादा का बहुत-बहुत-बहुत यादप्यार और नमस्ते।

राजस्थान के सेवाधारी - बहुत अच्छा सेवा का चांस राजस्थान को मिला। राजस्थान का जैसे नाम है `राजस्थान', तो राजस्थान से राजे क्वालिटी वाले निकालो। प्रजा नहीं, राज-घराने के राजे निकालो। तब जैसा नाम है राजस्थान, वैसे ही जैसा नाम वैसे सेवा की क्वालिटी निकलेगी। हैं कोई छिपे हुए राजे लोग या अभी बादलों में हैं? वैसे जो बिज़नेसमैन हैं उन्हों की सेवा पर विशेष अटेन्शन दो। यह मिनिस्टर और सेक्रेटरी तो बदलते ही रहते हैं लेकिन बिज़नेसमैन बाप से भी बिज़नेस करने में आगे बढ़ सकते हैं। और बिज़नेसमैन की सेवा करने से उनकी परिवार की मातायें भी सहज आ सकती हैं। अकेली मातायें नहीं चल सकती हैं लेकिन अगर घर का स्तम्भ आ जाता है तो परिवार आपेही धीरे-धीरे बढ़ता जाता है इसलिए राजस्थान को राजे क्वालिटी निकालनी है। ऐसे कोई नहीं हैं, ऐसा नहीं

कहो। थोड़ा ढूंढना पड़ेगा लेकिन हैं। थोड़ा सा उन्हों के पीछे समय देना पड़ता है। बिज़ी रहते हैं ना! कोई ऐसी विधि बनानी पड़ती जो वह नज़दीक आवें। बाकी अच्छा है, सेवा का चांस लिया, हर एक ज़ोन लेता है यह बहुत अच्छा नजदीक आने और दुआयें लेने का साधन है। चाहे आप लोगों को सब देखें या नहीं देखें, जानें या नहीं जाने, लेकिन जितनी अच्छी सेवा होती है तो दुआयें स्वत: निकलती हैं और वह दुआयें पहुँचती बहुत जल्दी हैं। दिल की दुआयें हैं ना! तो दिल में जल्दी पहुँचती हैं। बापदादा तो कहते हैं सबसे सहज पुरूषार्थ है दुआयें दो और दुआयें लो। दुआओं से जब खाता भर जायेगा तो भरपूर खाते में माया भी डिस्टर्ब नहीं करेगी। जमा का बल मिलता है। राजी रहो और सर्व को राजी करो। हर एक के स्वभाव का राज़ जानकर राजी करो। ऐसे नहीं कहो यह तो है ही नाराज़। आप स्वयं राज़ को जान जाओ, उसकी नब्ज को जान जाओ फिर दुआ की दवा दो। तो सहज हो जायेगा। ठीक है ना राजस्थान! राजस्थान की टीचर्स उठो। सेवा की मुबारक हो। तो सहज पुरूषार्थ करो, दुआयें देते जाओ। लेने का संकल्प नहीं करो, देते जाओ तो मिलता जायेगा। देना ही लेना है। ठीक है ना! ऐसा है ना! दाता के बच्चे हैं ना! कोई दे तो दें। नहीं, दाता बनके देते जाओ तो आपेही मिलेगा। अच्छा।

जो इस कल्प में पहली बार आये हैं वो हाथ उठाओ। आधे पहले वाले आते हैं, आधे नये आते हैं। अच्छा - पीछे वाले, किनारे में बैठे हुए सभी सहजयोगी हो? सहज योगी हो तो एक हाथ उठाओ। अच्छा।

विदाई के समय - (बापदादा को रथ यात्राओं का समाचार सुनाया) चारों तरफ का यात्राओं का समाचार समय प्रति समय बापदादा के पास आता रहता है।अच्छा सब उमंग-उत्साह से सेवा का पार्ट बजा रहे हैं। भक्तों को दुआयें मिल रही हैं और जिन भक्तों की भक्ति पूरी हुई, उन्हों को बाप का परिचय मिल जायेगा और परिचय वालों से जो बच्चे बनने होंगे वह भी दिखाई देते रहेंगे। बाकी सेवा अच्छी चल रही है और जो भी साधन बनाया है वह साधन अच्छा सबको आकर्षित कर रहा है। अभी रिज़ल्ट में कौन-कौन किस केटगिरी में निकलता है वह मालूम पड़ जायेगा लेकिन भक्तों को भी आप सबकी नजर-दृष्टि मिली, परिचय मिला - यह भी अच्छा साधन है। अब आगे बढ़कर इन्हों की सेवा कर आगे बढ़ाते रहना। जो भी रथ यात्रा में सेवा कर रहे हैं, अथक बन सेवा कर रहे हैं, उन सभी को यादप्यार। बापदादा सभी को देखते रहते हैं और सफलता तो जन्म-सिद्ध अधिकार है। अच्छा।

मॉरीशियस में अपने ईश्वरीय विश्व-विद्यालय को नेशनल युनिटी एवार्ड प्राइममिनिस्टर द्वारा मिला है

मॉरीशियस में वैसे भी वी.आई.पी. का कनेक्शन अच्छा रहा है और प्रभाव भी अच्छा है इसलिए गुप्त सेवा का फल मिला है तो सभी को खास मुबारक।

अच्छा। ओमशान्ति।

==

QUIZ QUESTIONS

==

प्रश्न 1 :- स्मृति दिवस का विशेष महत्व बाबा ने क्या समझाया है ?

प्रश्न 2 :- आज बापदादा ने बच्चों की कौन सी दो विशेषतायें बहुत अच्छी बताई हैं ?

प्रश्न 3 :- ब्रह्मा बाप के त्याग की कहानी और ब्रह्मा और ब्राह्मण बच्चों की तपस्या का प्रभाव क्या है ?

प्रश्न 4 :- साइलेन्स बल का वायब्रेशन तीव्रगति से फैलाने का साधन क्या है ?

प्रश्न 5 :- नजदीक आने और दुआयें लेने का साधन क्या है और सहज पुरषार्थ बाबा ने क्या बताया है ?

FILL IN THE BLANKS:-

(बिज़नेसमैन, भक्ति, त्याग, सेक्रेटरी, दुआयें, पेपर, बिरादरी, उमंग, मिनिस्टर, शाखायें, तपस्या, ब्रह्मा बाप, चाबी, परिवार, परिचय)

1 एवररेडी हो या रेडी हो, सिर्फ रेडी नहीं - एवररेडी।_______, _______, सेवा तीनों ही _______ तैयार हो गये हैं?

2 _______ के हर कार्य के उत्साह को तो देखा ही है। जैसे शुरू में _______ था - _______ चाहिए! अभी भी ब्रह्मा बाप यही शिव बाप से कहते - अभी घर के दरवाजे की चाबी दो।

3 आप ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर के बच्चे हैं, आपके ही सभी _______ हैं, _______ हैं, _______ है, आप ही भक्तों के इष्ट देव हो।

4 सब उमंग-उत्साह से सेवा का पार्ट बजा रहे हैं। भक्तों को _______ मिल रही हैं और जिन भक्तों की _______ पूरी हुई, उन्हों को बाप का परिचय मिल जायेगा और _______ वालों से जो बच्चे बनने होंगे वह भी दिखाई देते रहेंगे।

5 जो _______ हैं उन्हों की सेवा पर विशेष अटेन्शन दो। यह _______ और _______ तो बदलते ही रहते हैं लेकिन बिज़नेसमैन बाप से भी बिज़नेस करने में आगे बढ़ सकते हैं।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:- 【✓】 【✕】

1 :- सभी बच्चों का एक ही दृढ़ संकल्प हो कि अभी अपने भाई-बहनों के दु:ख की घटनायें परिवर्तन हो जाएँ।

2 :- हम तो आह्वान कर रहे हैं कि नई सृष्टि की रचना करने वाले आवें। अभी काम सारा बाप के ऊपर है। नगाड़ा बजाओ।

3 :- विशेष डबल विदेशियों का अव्यक्त पालना द्वारा अलौकिक जन्म होना ही था, इतने सब बच्चों को आना ही था। इसलिए ब्रह्मा बाप को अपना साकार शरीर भी छोड़ना पड़ा।

4 :- मॉरीशियस में वैसे भी वी.आई.पी. का कनेक्शन अच्छा रहा है और प्रभाव भी अच्छा है इसलिए प्रत्यक्ष सेवा का फल मिला है तो सभी को खास मुबारक।

5 :- राजस्थान का जैसे नाम है `राजस्थान', तो राजस्थान से राजे क्वालिटी वाले निकालो। प्रजा नहीं, राज-घराने के राजे निकालो। तब जैसा नाम है राजस्थान, वैसे ही जैसा नाम वैसे सेवा की क्वालिटी निकलेगी।

==

QUIZ ANSWERS

==

प्रश्न 1 :- स्मृति दिवस का विशेष महत्व बाबा ने क्या समझाया है ?

उत्तर 1 :- .. बाबा बताते हैं कि:-

..❶ आज का दिन स्मृति दिवस सो समर्थ दिवस है। आज का दिन बच्चों को सर्व शक्तियां विल में देने का दिवस है।

..❷ दुनिया में अनेक प्रकार की विल होती है लेकिन ब्रह्मा बाप ने बाप से प्राप्त हुई सर्व शक्तियों की विल बच्चों को की।ऐसी अलौकिक विल और कोई भी कर नहीं सकते हैं।

..❸ बाप ने ब्रह्मा बाप को साकार में निमित्त बनाया और ब्रह्मा बाप ने बच्चों को `निमित्त भव' का वरदान दे विल किया। यह विल बच्चों में सहज पावर्स की (शक्तियों की) अनुभूति कराती रहती है।

..❹ एक है अपने पुरूषार्थ की पावर्स और यह है परमात्म-विल द्वारा पावर्स की प्राप्ति। यह प्रभु देन है, प्रभु वरदान है। यह प्रभु वरदान चला रहा है।

..❺ वरदान में पुरूषार्थ की मेहनत नहीं लेकिन सहज और स्वत: निमित्त बनाकर चलाते रहते हैं। सामने थोड़े से रहे लेकिन बापदादा द्वारा, विशेष ब्रहमा बाप द्वारा विशेष बच्चों को यह विल प्राप्त हुई है।

..❻ और बापदादा ने भी देखा कि जिन बच्चों को बाप ने विल की उन सभी बच्चों ने (आदि रत्नों ने और सेवा के निमित्त बच्चों ने) उस प्राप्त विल को अच्छी तरह से कार्य में लगाया।

..❼ और उस विल के कारण आज यह ब्राहमण परिवार दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जाता है। बच्चों की विशेषता के कारण यह वृद्धि होनी थी और हो रही है।

प्रश्न 2 :- आज बापदादा ने बच्चों की कौन सी दो विशेषतायें बहुत अच्छी बताई हैं ?

उत्तर 2 :- .. बापदादा ने देखा कि:-

..❶ निमित्त बने हुए और साथ देने वाले दोनों प्रकार के बच्चों की दो विशेषतायें बहुत अच्छी रही।

..❷ पहली विशेषता - चाहे स्थापना के आदि रत्न, चाहे सेवा के रत्न दोनों में संगठन की युनिटी बहुत-बहुत अच्छी रही। किसी में भी क्यों, क्या, कैसे... यह संकल्प मात्र भी नहीं रहा।

..❸ दूसरी विशेषता - एक ने कहा दूसरे ने माना। यह एकस्ट्रा पावर्स के विल के वायुमण्डल में विशेषता रही। इसलिए सर्व निमित्त बनी हुई आत्माओं को बाबा-बाबा ही दिखाई देता रहा।

..❹ बापदादा ऐसे समय पर निमित्त बने हुए बच्चों को दिल से प्यार दे रहे हैं। बाप की कमाल तो है ही लेकिन बच्चों की कमाल भी कम नहीं है।

..❺ और उस समय का संगठन, युनिटी - हम सब एक हैं, वही आज भी सेवा को बढ़ा रही है।

प्रश्न 3 :- ब्रह्मा बाप के त्याग की कहानी और ब्रह्मा और ब्राह्मण बच्चों की तपस्या का प्रभाव क्या है ?

उत्तर 3 :- .. बाबा कहते हैं कि:-

..❶ ब्रह्मा बाप का त्याग ड्रामा में विशेष नूंधा हुआ है। आदि से ब्रह्मा बाप का त्याग और आप बच्चों का भाग्य नूंधा हुआ है।

..❷ सबसे नम्बरवन त्याग का एक्ज़ाम्पल ब्रह्मा बाप बना। त्याग उसको कहा जाता है - जो सब कुछ प्राप्त होते हुए त्याग करे। समय अनुसार, समस्याओं के अनुसार त्याग - श्रेष्ठ त्याग नहीं है।

..❸ शुरू से ही देखो तन, मन, धन, सम्बन्ध, सर्व प्राप्ति होते हुए त्याग किया। शरीर का भी त्याग किया, सब साधन होते हुए स्वयं पुराने में ही रहे। साधनों का आरम्भ हो गया था। होते हुए भी साधना में अटल रहे।

..❹ यह ब्रह्मा की तपस्या आप सब बच्चों का भाग्य बनाकर गई। ड्रामानुसार ऐसे त्याग का एक्ज़ाम्पल रूप में ब्रह्मा ही बना

..❺ और इसी त्याग ने संकल्प शक्ति की सेवा का विशेष पार्ट बनाया।जो नये-नये बच्चे संकल्प शक्ति से फास्ट वृद्धि को प्राप्त कर रहे हैं। तो सुना ब्रह्मा के त्याग की कहानी।

..❻ ब्रह्मा की तपस्या का फल आप बच्चों को मिल रहा है। तपस्या का प्रभाव इस मधुबन भूमि में समाया हुआ है। साथ में बच्चे भी हैं, बच्चों की भी तपस्या है लेकिन निमित्त तो ब्रह्मा बाप कहेंगे।

..❼ जो भी मधुबन तपस्वी भूमि में आते हैं तो ब्राह्मण बच्चे भी अनुभव करते हैं कि यहाँ का वायुमण्डल, यहाँ के वायब्रेशन सहजयोगी बना देते हैं।

..❽ योग लगाने की मेहनत नहीं, सहज लग जाता है और कैसी भी आत्मायें आती हैं, वह कुछ न कुछ अनुभव करके ही जाती हैं।

..❾ ज्ञान को नहीं भी समझते लेकिन अलौकिक प्यार और शान्ति का अनुभव करके ही जाते हैं। कुछ न कुछ परिवर्तन करने का संकल्प करके ही जाते हैं। यह है ब्रह्मा और ब्राह्मण बच्चों की तपस्या का प्रभाव।

प्रश्न 4 :- साइलेन्स बल का वायब्रेशन तीव्रगति से फैलाने का साधन क्या है ?

उत्तर 4 :- .. जैसे साइन्स का बल अपना प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में दिखा रहा है ऐसे साइन्स की भी रचता साइलेन्स बल है। साइलेन्स बल को अभी प्रत्यक्ष दिखाने का समय है। साइलेन्स बल का वायब्रेशन तीव्रगति से फैलाने का साधन है - मन-बुद्धि की एकाग्रता। यह एकाग्रता का अभ्यास बढ़ना चाहिए। एकाग्रता की शक्तियों द्वारा ही वायुमण्डल बना सकते हो। हलचल के कारण पावरफुल वायब्रेशन बन नहीं पाता

प्रश्न 5 :- नजदीक आने और दुआयें लेने का साधन क्या है और सहज पुरषार्थ बाबा ने क्या बताया है ?

उत्तर 5 :- .. बाबा कहते हैं:-

..❶ अच्छा है सेवा का चांस लिया, हर एक ज़ोन लेता है यह बहुत अच्छा नजदीक आने और दुआयें लेने का साधन है।

..❷ चाहे आप लोगों को सब देखें या नहीं देखें, जानें या नहीं जाने, लेकिन जितनी अच्छी सेवा होती है तो दुआयें स्वत: निकलती हैं और वह दुआयें पहुँचती बहुत जल्दी हैं। दिल की दुआयें हैं ना! तो दिल में जल्दी पहुँचती हैं।

..❸ बापदादा तो कहते हैं सबसे सहज पुरूषार्थ है दुआयें दो और दुआयें लो। दुआओं से जब खाता भर जायेगा तो भरपूर खाते में माया भी डिस्टर्ब नहीं करेगी। जमा का बल मिलता है।

..❹ राजी रहो और सर्व को राजी करो। हर एक के स्वभाव का राज़ जानकर राजी करो। ऐसे नहीं कहो यह तो है ही नाराज़। आप स्वयं राज़ को जान जाओ, उसकी नब्ज को जान जाओ फिर दुआ की दवा दो। तो सहज हो जायेगा।

..❺ तो सहज पुरूषार्थ करो, दुआयें देते जाओ। लेने का संकल्प नहीं करो, देते जाओ तो मिलता जायेगा। देना ही लेना है। कोई दे तो दें। नहीं, दाता बनके देते जाओ तो आपेही मिलेगा।

FILL IN THE BLANKS:-

(बिज़नेसमैन, भक्ति, चाबी, त्याग, सेक्रेटरी, दुआयें, बिरादरी, उमंग, मिनिस्टर, पेपर, शाखायें, तपस्या, ब्रह्मा बाप, परिवार, परिचय)

1 एवररेडी हो या रेडी हो, सिर्फ रेडी नहीं - एवररेडी। _______, _______, सेवा तीनों ही _______ तैयार हो गये हैं?

त्याग / तपस्या / पेपर

2 _______ के हर कार्य के उत्साह को तो देखा ही है। जैसे शुरू में _______ था - _______ चाहिए! अभी भी ब्रह्मा बाप यही शिव बाप से कहते - अभी घर के दरवाजे की चाबी दो।

ब्रह्मा बाप / उमंग / चाबी

3 आप ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर के बच्चे हैं, आपके ही सभी _______ हैं, _______ हैं, _______ है, आप ही भक्तों के इष्ट देव हो।

बिरादरी / शाखायें / परिवार

4 सब उमंग-उत्साह से सेवा का पार्ट बजा रहे हैं। भक्तों को _______ मिल रही हैं और जिन भक्तों की _______ पूरी हुई, उन्हों को बाप का

परिचय मिल जायेगा और _______ वालों से जो बच्चे बनने होंगे वह भी दिखाई देते रहेंगे।

दुआयें / भक्ति / परिचय

5 जो _______ हैं उन्हों की सेवा पर विशेष अटेन्शन दो। यह _______ और _______ तो बदलते ही रहते हैं लेकिन बिज़नेसमैन बाप से भी बिज़नेस करने में आगे बढ़ सकते हैं।

बिज़नेसमैन / मिनिस्टर / सेक्रेटरी

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:- 【✓】 【✕】

1 :- सभी बच्चों का एक ही दृढ़ संकल्प हो कि अभी अपने भाई-बहनों के दु:ख की घटनायें परिवर्तन हो जाएँ। 【✓】

2 :- हम तो आह्वान कर रहे हैं कि नई सृष्टि की रचना करने वाले आवें। अभी काम सारा बाप के ऊपर है। नगाड़ा बजाओ। 【✕】

हम तो आह्वान कर रहे हैं कि नई सृष्टि की रचना करने वाले आवें। अभी काम सारा आप के ऊपर है। नगाड़ा बजाओ।

3 :- विशेष डबल विदेशियों का अव्यक्त पालना द्‍वारा अलौकिक जन्म होना ही था, इतने सब बच्चों को आना ही था। इसलिए ब्रह्मा बाप को अपना साकार शरीर भी छोड़ना पड़ा। 【✓】

4 :- मॉरीशियस में वैसे भी वी.आई.पी. का कनेक्शन अच्छा रहा है और प्रभाव भी अच्छा है इसलिए प्रत्यक्ष सेवा का फल मिला है तो सभी को खास मुबारक। 【✕】

मॉरीशियस में वैसे भी वी.आई.पी. का कनेक्शन अच्छा रहा है और प्रभाव भी अच्छा है इसलिए गुप्त सेवा का फल मिला है तो सभी को खास मुबारक।

5 :- राजस्थान का जैसे नाम है `राजस्थान', तो राजस्थान से राजे क्वालिटी वाले निकालो। प्रजा नहीं, राज-घराने के राजे निकालो। तब जैसा नाम है राजस्थान, वैसे ही जैसा नाम वैसे सेवा की क्वालिटी निकलेगी। 【✓】